भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 1565
गुरुवार, 12 फरवरी, 2026 को उत्तर देने के लिए

उपग्रह प्रक्षेपण सेवाओं का विस्तार

1565. श्री महेंद्र भट्टः

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या इसरो और इन-स्पेस ने उपग्रह प्रक्षेपण बाजार में भारत की वैश्विक बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए कोई रोडमैप तैयार किया है; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

****

(क) और (ख)

जून 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र में हुए सुधारों के बाद, अंतरिक्ष विभाग के अधीन एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (सीपीएसई), मेसर्स न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (एनसिल) ने वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत के योगदान को बढ़ाने के लिए देश में निजी उद्योग और अंतरिक्ष स्टार्टअप को शामिल करने के लिए अंतरिक्ष मूल्य श्रृंखला के पार अनेक कदम उठाए हैं।

प्रमुख गतिविधियों का विवरण निम्नानुसार है:

- एनसिल ने इसरो के तकनीकी सहयोग से एचएएल-एलएंडटी संघ के माध्यम से 5 पीएसएलवी-एक्सएल यानों के निर्माण की पहल की है।
- एनसिल ने इसरो के तकनीकी पर्यवेक्षण के तहत सूक्ष्म भू-प्रेक्षण उपग्रहों के निर्माण के लिए विविध भारतीय उद्योगों/स्टार्टअप्स को शामिल किया है।
- एनसिल ने विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए त्वरित आधार पर भू केंद्र/गेटवे स्थापित करने हेतु अनेक भारतीय उद्योगों को शामिल किया है।
- एनसिल ने इसरो और इन-स्पेस के माध्यम से अब तक 100 प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

..2/-

समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनके तहत इसरो/अंतरिक्ष विभाग में विकसित प्रौद्योगिकियों को गैर-सरकारी संस्थाओं/निजी उद्योगों को हस्तांतरित किया जाएगा। इससे उन्हें प्रौद्योगिकी को आत्मसात करने, वाणिज्यिक उत्पाद विकसित करने/सेवाएं प्रदान करने और घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार में उसका विपणन करने में सहायता मिलेगी। भारतीय उद्योग को हस्तांतरित की गई दो प्रमुख प्रौद्योगिकियों में आईएमएस-1 उपग्रह बस और लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान शामिल हैं।

- एनसिल ने भारतीय उद्योग को इसरो की मोबाइल उपग्रह सेवा (एमएसएस) प्रौद्योगिकी को आत्मसात करने और उत्पादन बढ़ाने में सक्षम बनाया है ताकि मछली पकड़ने वाले 1 लाख समुद्री जहाजों पर एस बैंड टर्मिनल स्थापित किए जा सकें और मानिटरन, नियंत्रण तथा निगरानी के लिए अखिल भारतीय पोत संचार एवं सहायता प्रणाली स्थापित की जा सके।
- एनसिल ने ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मांग-आधारित वाणिज्यिक संचार उपग्रह मिशन शुरू किए हैं। अब तक, एनसिल ने भारतीय ग्राहकों की डायरेक्ट-टू-होम (डीटीएच) और ब्रॉडबैंड आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जीसैट-एन1 और जीसैट-एन2 नामक दो वाणिज्यिक संचार उपग्रह स्थापित किए हैं तथा जीसैट-एन3 को साकार करने की प्रक्रिया में है। इन मिशनों के लिए बड़ी संख्या में उपयोगकर्ता टर्मिनलों की आवश्यकता होगी, जिनकी पूर्ति भारतीय उद्योग के माध्यम से की जाएगी।
- इसरो/एनसिल के प्रक्षेपण यानों (पीएसएलवी, एसएसएलवी और एलवीएम3) पर अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों को प्रक्षेपण सेवाएं प्रदान करने के एनसिल के प्रयास वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत के योगदान को और बढ़ाएंगे।

ऊपर विस्तारपूर्वक वर्णित एनसिल द्वारा उठाए गए कदमों का उद्देश्य भारतीय अंतरिक्ष उद्योग की क्षमता का निर्माण करना है ताकि वह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में बेहतर भूमिका निभा सके और भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को संस्थिर रूप से बढ़ा सके।

भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र (इन-स्पेस) ने उपग्रह प्रक्षेपण बाजार में भारत की वैश्विक हिस्सेदारी बढ़ाने की रणनीति भी तैयार की है। इसके अनुसार, वर्ष 2033 तक 44 अरब अमेरिकी डॉलर की कुल भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में प्रक्षेपण क्षेत्र से 3.5 अरब अमेरिकी डॉलर का योगदान प्राप्त होने की उम्मीद है।

****